हाथी अपने दुश्मन को शब्दों से पहचानते हैं

कुछ ही जानवर हाथियों के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं। इनमें मनुष्य प्रमुख है। मगर सारे मनुष्य खतरा नहीं होते। और हाथी यह जानते हैं कि कौन उनके लिए खतरनाक है। कुछ अफ्रीकी कबीले हाथियों के दुश्मन होते हैं जबकि कुछ समूह दुश्मन नहीं होते। हाथियों में देखकर और सूंघकर इनके बीच अंतर करने की ज़बरदस्त क्षमता देखी गई है। हाल में एक अध्ययन से पता चला है कि दुश्मनों और अन्य के बीच भेद करने में हाथी कबीलों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों का भी उपयोग कर लेते हैं।

यूके के ससेक्स विश्वविद्यालय की जीव वैज्ञानिक कैरन मैककॉम्ब और ग्रेमी शेनॉन ने अंदाज़ा लगाया कि शायद अफ्रीकी हाथी मनुष्य की भाषा को सुनकर उसका उपयोग इस काम में करते होंगे। इसको जानने के लिए उन्होंने कीन्या के दो अलग-अलग जनजातीय समूहों की भाषा में 'देखो, देखो, वहां देखो, हाथियों का झुंड आ रहा है' रिकॉर्ड कर लिया। यह बात एकदम शांत ढंग से बोली गई थी। इनमें से एक समूह मासई लोगों का था जो पानी और अपने मवेशियों को चराने की जगह हासिल करने के लिए यदा-कदा हाथियों को मारता था। दूसरा समूह काम्बा मूलतः खेतिहर था और शायद ही कभी उन्होंने हाथियों पर हमला किया हो।

शोधकर्ताओं ने इस आवाज़ 'देखो, देखो, वहां देखो, हाथियों का झुंड आ रहा है' की रिकॉर्डिंग को कीन्या स्थित एम्बोसेली नेशनल पार्क के 47 हाथी-झुंडों को सुनाई और हाथियों के व्यवहार को मॉनीटर किया। हाथियों ने मासई जनजाति के पुरुष की आवाज़ सुनी तो वे चौकन्ने होकर हवा में सूंघने लगे और निकट आकर झुंड बनाने लगे। काम्बा जनजाति के पुरुषों की आवाज़ को सुनकर ऐसी प्रतिक्रिया नहीं हुई।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के जीव वैज्ञानिक फ्रिट्ज़ वॉलर्थ का कहना है कि हम यह तो जानते थे कि हाथी मासई और काम्बा जनजाति के लोगों को गंध और कपड़ों से पहचानते थे लेकिन यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि वे आवाज़ का उपयोग भी इसके लिए कर सकते हैं।

शोधकर्ताओं ने यह प्रक्रिया मासई महिलाओं और बच्चों की आवाज़ के साथ भी दोहराई। इस मामले में हाथी महिला आवाज़ सुनकर भाग खड़े हुए जबकि लड़कों की आवाज़ का ज़्यादा असर नहीं पड़ा।

यह साफ नहीं है कि हाथियों में यह क्षमता जन्मजात है या सीखी जाती है। लगता है कि यह क्षमता जन्मजात नहीं है। एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि हाथी एक-दूसरे को खतरनाक मनुष्यों के बारे में बताते भी हैं। अलग-अलग खतरों में अलग-अलग तरह की ध्वनि निकालते हैं। वैसे अभी यह पता नहीं है कि क्या वे किसी भाषा का उपयोग करते हैं या मात्र आवाज़ में उतार-चढ़ाव से संवाद होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***